

MASTER OF ARTS (POLITICAL SCIENCE) (MPS)

Term-End Examination December, 2024

MPSE-003: WESTERN POLITICAL THOUGHT (From Plato to Marx)

Most Important Previous Year Questions with Answers

Evaluate Plato's theory of justice.

Who is Plato?

Plato was an ancient Greek philosopher, born around 428–427 BCE, who was a student of Socrates and teacher to Aristotle. He is widely regarded as one of the most important figures in Western philosophy. Plato founded the Academy in Athens, one of the first institutions of higher learning in the Western world. His works, particularly "The Republic," deal with justice, politics, ethics, and the nature of knowledge.

प्लेटो कौन हैं?

प्लेटो एक प्राचीन ग्रीक दर्शनशास्त्री थे, जिनका जन्म लगभग 428-427 ईसा पूर्व हुआ था। वह सुकरात के शिष्य और अरस्तु के गुरु थे। प्लेटो को पश्चिमी दर्शनशास्त्र में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में माना जाता है। उन्होंने एथेन्स में अकादमी की स्थापना की, जो पश्चिमी दुनिया में उच्च शिक्षा का एक प्रमुख संस्थान था। उनके कार्य, विशेष रूप से "गणराज्य," न्याय, राजनीति, नैतिकता और ज्ञान की प्रकृति पर आधारित हैं।

Plato's Theory of Justice

Plato's theory of justice is most famously outlined in his work *The Republic*. He defines justice as the harmonious structure of society, where everyone plays their role according to their abilities and nature. Justice, according to Plato, is when each individual and class (rulers, warriors, and producers) does their own work without interfering in others' roles.

प्लेटो का न्याय का सिद्धांत

प्लेटो का न्याय का सिद्धांत उनके कार्य *गणराज्य* में सबसे प्रसिद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है। प्लेटो न्याय को समाज की सामंजस्यपूर्ण संरचना के रूप में परिभाषित करते हैं, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमताओं और स्वभाव के अनुसार अपनी भूमिका निभाता है। प्लेटो के अनुसार, न्याय तब होता है जब प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग (शासक, योद्धा और उत्पादक) अपना काम करता है बिना दूसरों के काम में हस्तक्षेप किए।

The Three Classes of Society

In *The Republic*, Plato divides society into three classes:

1. **Rulers (Philosopher-Kings):** The wisest individuals, responsible for making decisions for the good of all.
2. **Warriors (Guardians):** Protectors of the state, responsible for defending and maintaining order.
3. **Producers (Workers):** People who provide for the basic needs of society, such as farmers, artisans, and merchants.

समाज की तीन श्रेणियाँ

गणराज्य में प्लेटो समाज को तीन वर्गों में बाँटते हैं:

1. **शासक (दार्शनिक-राजा):** सबसे बुद्धिमान व्यक्ति, जो सभी के भले के लिए निर्णय लेते हैं।
2. **योद्धा (रक्षकों):** राज्य के रक्षक, जो रक्षा और व्यवस्था बनाए रखते हैं।
3. **उत्पादक (कर्मचारी):** वे लोग जो समाज की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, जैसे किसान, शिल्पकार, और व्यापारी।

The Concept of Justice

For Plato, justice occurs when each class performs its function without interfering with the others. He believed that when rulers are wise, warriors are courageous, and producers are industrious, justice prevails in the state. A just

society is achieved when individuals fulfill their roles naturally and contribute to the whole.

न्याय की अवधारणा

प्लेटो के लिए, न्याय तब होता है जब प्रत्येक वर्ग अपनी भूमिका निभाता है बिना दूसरों के काम में हस्तक्षेप किए। उन्होंने विश्वास किया कि जब शासक बुद्धिमान होते हैं, योद्धा साहसी होते हैं, और उत्पादक मेहनती होते हैं, तो राज्य में न्याय होता है। एक न्यायपूर्ण समाज तब प्राप्त होता है जब व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अपनी भूमिकाओं को निभाते हैं और पूरे समाज में योगदान करते हैं।

The Philosopher-King and Wisdom

Plato emphasized that the rulers of a just society should be philosopher-kings, as they possess the wisdom necessary to govern justly. Only those who understand the true nature of justice, knowledge, and reality are fit to rule.

दार्शनिक-राजा और ज्ञान

प्लेटो ने यह जोर दिया कि एक न्यायपूर्ण समाज के शासकों को दार्शनिक-राजा होना चाहिए, क्योंकि वे न्यायपूर्ण ढंग से शासन करने के लिए आवश्यक ज्ञान रखते हैं। केवल वही लोग जो न्याय, ज्ञान और वास्तविकता की सच्ची प्रकृति को समझते हैं, शासक बनने के योग्य होते हैं।

Criticism of Plato's Theory of Justice

Plato's theory has been criticized for being overly idealistic and authoritarian. Critics argue that his vision of a rigidly structured society limits personal freedoms and individual choice. Additionally, the idea of philosopher-kings has been challenged for being unrealistic, as it assumes that only a select few can govern justly.

प्लेटो के न्याय के सिद्धांत की आलोचना

प्लेटो के सिद्धांत की आलोचना इस बात के लिए की जाती है कि यह अत्यधिक

आदर्शवादी और तानाशाही है। आलोचक कहते हैं कि उनके समाज की कठोर संरचना व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं और स्वतंत्रता की पसंद को सीमित करती है। इसके अलावा, दार्शनिक-राजा का विचार अस्वाभाविक माना जाता है, क्योंकि यह मानता है कि केवल कुछ विशेष लोग ही न्यायपूर्ण ढंग से शासन कर सकते हैं।

Examine Edmund Burke's criticism of French Revolution.

Edmund Burke, an Irish statesman and philosopher, is best known for his strong critique of the French Revolution, expressed in his work *Reflections on the Revolution in France* (1790). He argued that the French Revolution was a dangerous and irrational break from tradition and order, and he offered a defense of gradual reform over radical change.

The French Revolution was a period of social, political, and economic upheaval in France that began in 1789 and lasted until 1799. It led to the overthrow of the monarchy, the establishment of a republic, and the eventual rise of Napoleon Bonaparte. The revolution was driven by the desire for equality, liberty, and fraternity, challenging the existing feudal system, absolute monarchy, and the privileges of the aristocracy and clergy. It brought significant changes to French society, including the Declaration of the Rights of Man and Citizen, and inspired revolutionary movements worldwide.

फ्रांसीसी क्रांति 1789 में शुरू होकर 1799 तक चलने वाली फ्रांस में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक उथल-पुथल की एक अवधि थी। इसने राजशाही का पतन, गणराज्य की स्थापना, और अंततः नेपोलियन बोनापार्ट का उदय किया। यह क्रांति समानता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व की चाहत से प्रेरित थी, जिसने मौजूदा सामंतवादी प्रणाली, पूर्ण राजशाही, और कुलीनता तथा धर्मगुरुओं के विशेषाधिकारों को चुनौती दी। इसने फ्रांसीसी समाज में महत्वपूर्ण बदलाव किए, जिसमें मानव और नागरिक के अधिकारों की घोषणा भी शामिल है, और इसने विश्वभर में क्रांतिकारी आंदोलनों को प्रेरित किया।

Below are the key points of Burke's criticism:

एडमंड बर्क, एक आयरिश राजनेता और दार्शनिक, फ्रांसीसी क्रांति की अपनी तीव्र आलोचना के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसे उन्होंने अपनी कृति *Reflections on the Revolution in France* (1790) में व्यक्त किया। उन्होंने तर्क किया कि फ्रांसीसी क्रांति परंपरा और व्यवस्था से एक खतरनाक और तर्कहीन विचलन था, और उन्होंने उग्र परिवर्तन के बजाय क्रमिक सुधार का समर्थन किया।

निम्नलिखित बर्क की आलोचना के प्रमुख बिंदु हैं:

1. Rejection of Revolutionary Ideals

Burke criticized the French Revolution's idealistic principles of liberty, equality, and fraternity. He believed that such ideals were abstract and disconnected from the realities of human society. According to Burke, these ideals led to chaos, violence, and the destruction of established institutions.

क्रांतिकारी आदर्शों का खंडन

बर्क ने फ्रांसीसी क्रांति के आदर्शों – स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व – की आलोचना की। उन्होंने माना कि ऐसे आदर्श अमूर्त हैं और मानव समाज की वास्तविकताओं से जुड़े नहीं हैं। बर्क के अनुसार, इन आदर्शों ने अराजकता, हिंसा और स्थापित संस्थाओं के विनाश को जन्म दिया।

2. The Importance of Tradition and Established Institutions

Burke argued that society should be built upon a foundation of tradition, established institutions, and gradual reform. He believed that change should be slow and organic, as traditions carry the wisdom of previous generations and maintain social stability.

परंपरा और स्थापित संस्थाओं का महत्व

बर्क ने तर्क किया कि समाज को परंपरा, स्थापित संस्थाओं और क्रमिक सुधार की नींव पर बनाना चाहिए। उनका मानना था कि परिवर्तन धीरे-धीरे और जैविक तरीके से होना

चाहिए, क्योंकि परंपराएँ पूर्व पीढ़ियों का ज्ञान संजोए होती हैं और सामाजिक स्थिरता बनाए रखती हैं।

3. The Dangers of Radical Change

Burke strongly opposed the radical changes brought by the French Revolution, such as the abolition of the monarchy, the church, and aristocracy. He believed that such abrupt and violent changes would lead to instability, anarchy, and the loss of order in society.

उग्र परिवर्तन के खतरे

बर्क ने फ्रांसीसी क्रांति द्वारा लाए गए उग्र परिवर्तनों का विरोध किया, जैसे राजतंत्र, चर्च और कुलीनता का उन्मूलन। उनका मानना था कि इस प्रकार के अचानक और हिंसक परिवर्तन समाज में अस्थिरता, अराजकता और व्यवस्था की हानि का कारण बनेंगे।

4. Support for a Constitutional Monarchy

Burke was a supporter of constitutional monarchy, believing that the British monarchy, with its established traditions and checks on power, provided a balanced form of government. He viewed this as a preferable alternative to the radical republicanism of the French Revolution.

संविधानिक राजतंत्र का समर्थन

बर्क संविधानिक राजतंत्र के समर्थक थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि ब्रिटिश राजतंत्र, जो स्थापित परंपराओं और सत्ता पर नियंत्रण के साथ था, एक संतुलित शासन रूप प्रदान करता है। उन्होंने इसे फ्रांसीसी क्रांति के उग्र गणराज्यवाद के बजाय एक बेहतर विकल्प माना।

6. The Role of the Aristocracy

Burke defended the role of the aristocracy in society, viewing them as a stabilizing force. He argued that the aristocracy provided leadership, experience, and wisdom that were necessary for the proper functioning of government and society.

कुलीनता की भूमिका

बर्क ने समाज में कुलीनता की भूमिका का बचाव किया, क्योंकि उन्हें लगता था कि वे स्थिरता बनाए रखने वाली शक्ति हैं। उनका कहना था कि कुलीनता शासन और समाज के सही ढंग से काम करने के लिए नेतृत्व, अनुभव और ज्ञान प्रदान करती है।

3. Briefly describe St. Augustine's views on state, property and slavery.

St. Augustine's Views on State, Property, and Slavery

St. Augustine, a prominent Christian philosopher and theologian of the 4th and 5th centuries, discussed political and social issues in his work *The City of God*. His views on the state, property, and slavery were influenced by Christian theology and the teachings of the Church. Here are the key points of his views:

संत ऑगस्टीन के राज्य, संपत्ति और दासता पर दृष्टिकोण

संत ऑगस्टीन, चौथी और पांचवीं शताब्दी के प्रमुख ईसाई दार्शनिक और धर्मशास्त्री, ने अपने कार्य *The City of God* में राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा की। उनके राज्य, संपत्ति और दासता पर विचार ईसाई धर्मशास्त्र और चर्च की शिक्षाओं से प्रभावित थे। उनके दृष्टिकोण के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. Views on the State

Augustine believed that the state was a necessary institution for maintaining peace and order in a fallen world. He saw the earthly state as a temporary and imperfect entity that should work in harmony with God's divine plan. The state's purpose, in his view, was to restrain evil and maintain justice.

राज्य पर दृष्टिकोण

ऑगस्टीन मानते थे कि राज्य एक आवश्यक संस्था है, जो एक गिरती हुई दुनिया में शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए जरूरी है। उन्होंने पृथ्वी पर राज्य को एक अस्थायी और अधूरा संगठन माना, जो भगवान की दिव्य योजना के साथ सामंजस्य में काम करना चाहिए। उनके अनुसार, राज्य का उद्देश्य बुराई को रोकना और न्याय बनाए रखना था।

2. Views on Property

St. Augustine viewed property as a natural right that is granted by God, but he also emphasized that it should be used responsibly. He believed that material possessions should not be the ultimate goal of life and should be shared with others in charity. For Augustine, wealth was a tool to promote the common good, not an end in itself.

संपत्ति पर दृष्टिकोण

संत ऑगस्टीन संपत्ति को एक प्राकृतिक अधिकार मानते थे, जो भगवान द्वारा प्रदान किया गया है, लेकिन उन्होंने यह भी जोर दिया कि इसका उपयोग जिम्मेदारी से किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि भौतिक संपत्ति जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं होनी चाहिए और इसे परोपकार में दूसरों के साथ साझा किया जाना चाहिए। उनके लिए, संपत्ति एक ऐसा उपकरण थी जो सामान्य भलाई को बढ़ावा देने के लिए था, न कि स्वयं में एक उद्देश्य।

3. Views on Slavery

St. Augustine's views on slavery were shaped by the social norms of his time, where slavery was an accepted institution. However, Augustine believed that slavery was a result of sin and human fallibility. He argued that slavery should be seen as a temporary condition, and Christians were encouraged to treat slaves with dignity and compassion, as all people were equal in the eyes of God.

दासता पर दृष्टिकोण

संत ऑगस्टीन के दासता पर दृष्टिकोण उनके समय की सामाजिक मान्यताओं से प्रभावित थे, जब दासता एक स्वीकृत संस्था थी। हालांकि, ऑगस्टीन मानते थे कि दासता पाप और मानव की दोषपूर्णता का परिणाम है। उन्होंने तर्क किया कि दासता को एक अस्थायी स्थिति के रूप में देखा जाना चाहिए, और ईसाईयों को दासों के साथ सम्मान और सहानुभूति के साथ पेश आने के लिए प्रेरित किया गया था, क्योंकि सभी लोग भगवान की दृष्टि में समान थे।

4. The Ideal State and Christian Governance

St. Augustine believed that the ideal state should reflect Christian principles. While he acknowledged the necessity of political authority, he argued that the true, eternal state was the "City of God," where justice, peace, and divine will prevailed. He advocated for a government that ruled with Christian values, though he did not demand theocratic rule.

आदर्श राज्य और ईसाई शासन

संत ऑगस्टीन मानते थे कि आदर्श राज्य को ईसाई सिद्धांतों को परिलक्षित करना चाहिए। हालांकि उन्होंने राजनीतिक अधिकार की आवश्यकता को स्वीकार किया, फिर भी उनका कहना था कि असली, शाश्वत राज्य "ईश्वर का नगर" है, जहाँ न्याय, शांति और दिव्य इच्छा का शासन होता है। उन्होंने एक ऐसा शासन प्रणाली का समर्थन किया, जो ईसाई मूल्यों के साथ शासित हो, हालांकि उन्होंने धर्मराज्य की मांग नहीं की।

Link of other parts is in description.

Subscribe for more